नानाजी देशमुख

लोकमत 1 मार्च 2010

नानाजी देशमुख

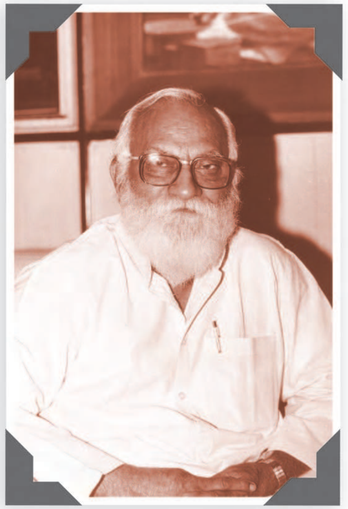

नानाजी देशमुख नहीं रहे। उनकी जीवनयात्रा कई मायने में प्रयोगधर्मी के बतौर संपन्न हुई। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के राष्ट्रवाद ने उनके मानस में राजनीतिक चेतना के बीज तो बोए, लेकिन बाद में वे हेडगेवार-गोलवलकर की विचारधारा की ओर समर्पित हो गए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक की भूमिका अपनाते हुए उन्होंने जनसंघ के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया। महाराष्ट्र के कडोली में जन्म लेकर उन्होंने उत्तर प्रदेश को अपनी राजनीतिक कर्मभूमि बनाया। डॉ. राममनोहर लोहिया के गैरकांग्रेसवाद से जुड़कर उन्होंने जनसंघ को भारतीय मतदाताओं में स्वीकृति दिलाने का अवसरोचित काम किया। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ-जनसंघ को अपेक्षित स्वीकृति जनता में नहीं मिल पा रही थी। जाहिर है कि नानाजी ने कांग्रेसविरोधी गैरकांग्रेसवाद का बेहतर इस्तेमाल कर चौथे आम चुनाव में उत्तर प्रदेश में जनसंघ को महत्वपूर्ण सफलता दिलाई। उनकी राजनीतिक सक्रियता 1980 तक मिशन की तरह जारी रही। जब 1974 में जयप्रकाश नारायण का संपूर्ण क्रांति आंदोलन प्रारंभ हुआ, तब नानाजी उनसे जुड़ गए, क्योंकि जयप्रकाश नारायण के अराजनीतिक आभामंडल के सहारे ही विशाल मतदाताओं में जनसंघ की राजनीतिक अस्पृश्यता समाप्त करने का विपुल अवसर था। निश्चित ही नानाजी ने वांछित लाभ जनसंघ को दिलाया। जनता पार्टी की सरकार के गठन में भी वह सक्रिय रहे, लेकिन दोहरी सदस्यता के विवाद और जनसंघ की जनता पार्टी से इतर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति निष्ठा के सवाल पर जब जनता पार्टी की सरकार का पतन हुआ, तब उसके बाद नानाजी राजनीतिक मंच को त्याग कर ग्रामोत्थान के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। हालांकि यह भी संघप्रणीत कार्यक्रम ही था। उन्होंने पहले उत्तर प्रदेश के गोंडा और बाद में उत्तर प्रदेश के कार्य किए। यह सारा कार्य जनसंघ के चिंतक दीनदयाल उपाध्याय के दृष्टिकोण पर विकसित किया गया। आत्मनिर्भर और विवादमुक्त ग्राम व्यवस्था का यह प्रयोग पांच सौ गांवों में चलाया गया। नानाजी के गुजरने के बाद इन गांवों में इन प्रयोगों के टिकाऊ होने पर सबकी नजर होगी। ग्रामोत्थान के कामों में लगे होने के बावजूद नानाजी को अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार ने राज्यसभा के लिए मनोनीत किया। हालांकि सरकार चलाने में उनकी भूमिका सलाहकार के बतौर भी शायद ही रही होगी। ग्रामोत्थान के उनके कार्यो को अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने सराहा, लेकिन कई राज्यों की भाजपा सरकारें भी उस माडल को आगे नहीं बढा सकीं हैं जबकि नानाजी का कार्य उनके लिए प्रेरणा का आधार बन सकता है। निश्चय ही नानाजी ने संघ संस्कारों में दीक्षित होकर अनेक प्रयोगों में अपने व्यक्तित्व का रूपांतरण किया। ऐसा व्यक्तित्व संघ परिवार में भी दुर्लभ ही है, जबकि गांवप्रधान देश को अनेक नानाजी देशमुखों की जरूरत है। नानाजी भी मार्क्सवादी नेता ज्योति बसु की तरह अपना देहदान कर गए हैं, ताकि उनका चिकित्साशास्त्रीय लाभ लिया जाए। नानाजी का समर्पण रेखांकित करने योग्य है। जब तक राजनीति में रहे, तब तक उसकी प्राथमिकताओं के प्रति समर्पित रहे और जब राजनीति छोड़कर ग्रामोदय की ओर आए, तो फिर राजनीति को मुड़कर नहीं देखा। इस तरह के दृढ़ निश्चय से उन्हें सबक लेनी चाहिए, जो किसी भी कीमत पर सत्ता के गलियारे से बाहर नहीं आना चाहते।

नानाजी देशमुख

नवभारत भोपाल 1 मार्च 2010

नानाजी देशमुख

नानाजी देशमुख को मध्य प्रदेश हमेशा याद रखेगा कि उन्होंने 1969 में दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की और उसके बाद 1991 में चित्रकूट में देश के पहले ग्रामोद्योग विश्वविद्यालय की स्थापना की। वे इसके प्रथम कुलाधिपति थे। देश के राजनैतिक व सामाजिक जीवन में वे आदर्श पुरूष व निष्काम कर्मयोगी थे। उनकी गणना उस वर्ग में की जायेगी जिसमें राजर्षि पुरूषोत्तमदास टंडन, आचार्य नरेन्द्र देव व विनोबा भावे जैसे संत राजनीतिज्ञ हुए हैं। आपातकाल में उन्होंने जयप्रकाश नारायण के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके 'जनता आंदोलन' को चलाया था। पटना में जब जयप्रकाश जी पर ही लाठीचार्ज कर दिया गया तो उसके लाठीप्रहार नानाजी ने ही अपने हाथों पर झेलकर जे.पी. के प्राणों की रक्षा की थी।

महाराष्ट्र के परभनी जिले के ग्राम कडोली में 11 अक्टूबर 1916 को जन्में नानाजी 1928 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और प्रचारक के रूप में उत्तर प्रदेश आ गए और गोंडा में बसे। जब श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की तो वे उसके संस्थापक सदस्य थे। जनसंघ के संगठनकर्ता के रूप में वे अखिल भारतीय छवि व क्षमता वाले नेतृत्व में आ गए और राष्ट्रीय महामंत्री रहे। 1977 में जनता लहर में वे उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से लोकसभा के लिए चुने गए, लेकिन मोरारजी सरकार में मंत्री बनने से अनिच्छा जाहिर कर दी। सन् 1999 में राज्यसभा सदस्य रहे।

अपनी 60 वर्ष की आयु में वे सक्रिय राजनीति से रिटायर हो गए और पूरी तौर पर ग्रामोद्योग व ग्राम विकास से जुड़ गए और चित्रकूट उनका कार्यक्षेत्र हो गया। जहां 27 फरवरी 2010 को उनका निधन हुआ। श्री देशमुख की चिरस्थाई स्मृति के रूप में देश भर में श्रृंखला के रूप में उनके द्वारा स्थापित सरस्वती शिशु मंदिर रहेंगे। वर्षाजल के संरक्षण (रेन वाटर हारवेस्टिंग) में उनका बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का योगदान है। इसके लिये उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। श्री देशमुख ने एक तपस्वी का जीवन जिया और पूरी श्रेष्ठता से देश के राजनैतिक क्रियाकलाप व जीवन के सांध्यकाल में ग्रामोदय के माध्यम से समाज सेवा की। चित्रकूट की धार्मिक नगरी में नानाजी के शोध संस्थान व ग्राम विश्वविद्यालय भी तीर्थस्थल के समान हैं।

उन्होंने अपना शरीर भी दान कर दिया है इसलिए उनका दाह संस्कार नहीं हुआ।